रात्री क्लास ओम शन्ति 14-10-67

ज्ञान है बहुत सहज। अन्धे लूले हों तो भी उंच पद पाये सकते है। इशारे से समझ सकते है। यह पक्का बाप है इनको याद करो समझ=में समझ में आ जाये कि बाप को याद करना है। तो भी कल्याण है। विकर्म विनाश हो जायेगें। यह तो जरूर है जाना तो सब को है। विनाश होता है तो खियाल खलास हो जाता है। तो जिस धर्म का होगा अपने सेक्शन में चला जावेंगा। यहां तो मिक्स है न। यह बच्चे जानते है सब धर्म वाले अपने 2सेक्शन में जाकर ठेहरेगें। बाप कहते है कल्प पहले भी तुम विश्व के मालिक थे। यह सिख्या पाई थी। तुम बच्चे रास्ता बहुत सहज बताते हो। बाप समझाते है कि रास्ता न समझे तो सब बातों से हटाये कर बोलो तुम आत्मा हो। सब आत्माओं का एक बाप है, वह नई दुनियां का रचियता है। पुरानी दुनियां तो नहीं क्रियेट करेगें। यह परिचय दे कर बोलो बेहद के बाप को याद करो। यह है पुरानी कलियुगी दुनियां। ओल्ड वर्ल्ड है। सतयुग न्यू वर्ल्ड पास्ट हो गई है। यह पुरानो दुनियो का बाप रचता है नई दुनियां का। इसमें तुम कोई की गिलानी आद नहीं करते हो। बोलो बाबा समझाते है इस समय जो कुछ है भक्ति मार्ग। ज्ञान सागर एक को कहा जाता है। वही सर्व का सदगति दाता पतित पावन है। यह पक्का 2याद कर लो बाप ऐसे कहते है मैं आकर नई दुनियां रचता हूं। पुरानी दुनियां खत्म हो जानी है। यह नई दुनियां थी तो यह नही थी। अब यह नहीं है। फिर स्थापना हो रही है इनकी राजधानी। बाप को याद करने से पावन बन जावेगें। ये वर्ल्ड की हिस्ट्री, जागराफी को जानना है। अथवा त्रिकाल दर्शी बनना है तो फिर चक्रवर्ती राजा बन जावेगें। यह ढंढोरा पीटते रहो। यह ख्याल न करो कि थोरे आते हैं टिकते नहीं। बाप कहते है कोटो में कोई यथार्थ रीतों से आवेगें वोही वारस बनेंगे ड्रामा अनुसार तुम पुरुषार्थ जरूर करते हो इसलिये फिकर की बात नहीं। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ जरूर का करावेगें। चिन्ता तो बाबा को होनी चाहिये। यहां सर्विस नहीं है यह है तुम तो बिल्कुल बेफिकर रहो। बाबा हर एक को जानता है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करना है। तुम रह न सकेगें पुरुषार्थ बिगर। अगर रह जायें तो कहेगें इनकी तकदीर में नहीं है। पुरुषार्थ भी पूरा। जितना हो सके पढाई का रिगार्ड रखना चाहिये। एक दिन भी मुरली मिस न करनी चाहिये। बाबा कहते है जो भी मुरली न पढी हो यहां बैठ कर पढो नहीं तो एबसेन्ट पड़ जावेगी। गाडली स्टूडेंट को क्लास कब मिस न करना चाहिये। बड़े ते बड़ा पद है। कोई भी बात है तो बाप से पूछ सकते हो। पूछने के लिये क्यों बैठ पूछो एक सेकंड में तुमको तुम्हारी सब बाते उड़ाये देगें। बाबा को याद करते हो चक्र को याद करते हो। बाकी क्या है। और बातों को छोड़ दो। समझ तो मिली है पाप आत्मा का अन्न नहीं खाना है। तुम जानते हो हम सारे विश्व को पवित्र बनाते है। तुम ही गोप गोपियां हो जो अंगुली देती हो दुनियां को पल्टने में। अर्थ यह तुम ही समझते हो। तुम्हारे दुारा भारत पल्ट जाता है। तुमको राज्य मिलना ही है। बात है सतो प्रधान बनना है पुरुषार्थ से। तुम बच्चे बहुत खुशी में रहेंगें तो सर्विस भी करेगें। बहुत लिखते है कि हम छोड़ देवें नौकरी। पैसा क्या करेगें। जो गवर्मेंट की सर्विस करते है तो गवर्मेंट से खर्चा मिलता है। यहां भी सर्विस करें। डिस सर्विस न करें। यहां बैठे हो खाना तो मिलता है न। बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह लिये भी सर्विस करते है। वो कर्म करते फिर भी तुम सब गाडली सर्विस पर हो। बाप को याद करो 84के चक्र को याद करो। उल्टा सुल्टा कुछ पूछे तो बोलो बाप ने कहा है मामेकम् याद करो तो तुम सतो प्रधान बन जावेगें। बस रचता और रचना को जाना है। समझाओ। जितना पुरुषार्थ करना हो करते रहो। तंग न होवें। गाडली सर्विस को छोडो नहीं। तुम्हारी सर्विस हो रही है। समझेगें भी नम्बरवार। सब एक जैसा थोड़ा ही समझेगें। पुरुषार्थ अभी करना है। तकलीफ तो कोई नहीं है। डबल सिरताज बनना है या इनकी राजधानी में जाना है? सब तो यथा राजा रानी तथा प्रजा को है। इस समय सारी दुनियां में दुख ही दुख है। सुख है अल्प काल क्षण भंगुर। सारी नालिज तो बच्चों की बुधि में है। ओम शान्ति।